आज अवकाश

दैनिक निर्दलीय कार्यालय में तकनीकी कारणों से १३ अक्टूबर को अवकाश रहेगा। अतएव, निर्दलीय का आगामी अंक १५ अक्टूबर २०२५ को पाठकों के हाथों में होगा।

- प्रबंध संपादक,
दैनिक निर्दलीय

निर्दलीय प्रकाशन

फ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७
शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.com पर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें

निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ | अंक- ९१ | भोपाल, १३ अक्टूबर, डाक १४ अक्टूबर २०२५ | भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित | पृष्ठ -८ | मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

ऊंचे पढ़े-लिखे करते हैं खोटे काम। तो चुप्पीधारियों पर भी लगते हैं इल्जाम।।

अग्र विचार
विचार प्रवाह-२९७

कैलाश आदमी

बंगलुरु के पूर्व पुलिस आयुक्त एवं भाजपा नेता भास्कर राव ने हाल ही देश के सर्वोच्च न्यायाधीश श्री बीआर गवई पर जूता उछालने वाले अधिवक्ता राकेश किशोर की प्रशंसा के पुल बांध दिए और आलोचना होने पर अपनी समाज माध्यम पोस्ट के लिए माफी मांग ली लेकिन जूता उछालने वाले राकेश किशोर जिसकी सदस्यता सर्वोच्च न्यायालय की अधिवक्ता परिषद ने खत्म कर दी है, माफी ना मांगकर अपने अड़ियलपन और धार्मिक कट्टरता का परिचय दिया है जिसकी समाज माध्यमों से जुड़े अधिकांश लोग निंदा व भर्त्सना कर रहे हैं किंतु कट्टरपंथी हिंदुओं के दुनिया के सबसे बड़े संगठन का दावा करने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख श्री मोहन भागवत की चुप्पी ने कट्टरपंथियों को समाज माध्यमों पर सक्रिय रहने हेतु प्रोत्साहित किया है।

ज्ञातव्य है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और सभी विपक्षी दलों के नेता जिनमें विपक्ष के प्रमुख श्री राहुल गांधी का नाम उल्लेखनीय है के साथ कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मल्लिकार्जुन खरगे जूता फेंकने वाले राकेश किशोर की भर्त्सना कर चुके हैं। श्री खरगे जो राज्य सभा में विपक्ष के नेता हैं ने जूता उछालने की घटना की निंदा करते हुए कहा कि ऐसे लोगों को दंडित किया ही जाना चाहिए जो मनुस्मृति और सनातन धर्म के नाम पर नागरिकों के मौलिक अधिकारों का हनन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार में चाहे कोई आम दलित हो या किसी बड़े पद पर आसीन दलित हो, उसका कोई सम्मान नहीं है। उन्होंने इस बात पर दुख जताया कि इस घटना की देश में सार्वजनिक रूप से व्यापक स्तर पर निंदा होना थी जो नहीं हुई। इसके विपरीत कट्टरपंथियों द्वारा समाज माध्यमों पर आकर जूता फेंकू अधिवक्ता का पक्ष लिया जा रहा है जिससे समाज में शांति भंग होने और अनावश्यक तनाव फैलने की आशंका बढ़ रही है। बंगलुरु के पूर्व पुलिस आयुक्त भास्कर राव को अभी तक भाजपा से निकाल बाहर नहीं किया गया है। यही वजह है कि श्री राव कह रहे हैं कि उनकी प्रतिक्रिया हैरानी और सदमे से भरी थी क्योंकि एक व्यक्ति इतना शिक्षित, वृद्ध और अनुभवी होने के बावजूद एक भयानक और कानूनी रूप से गलत कार्य के परिणामों को पूरी तरह से यह कृत्य किया। उनका कहना है कि उन्होंने ना तो सर्वोच्च न्यायालय, ना ही सर्वोच्च न्यायाधीश या दलित समुदाय का अपमान किया है। अगर मेरे पोस्ट से किसी को गुस्सा आया या ठेस पहुंची तो मुझे खेद है।

ज्ञातव्य है कि श्री राव ने कर्नाटक के चांदराज पेठ विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा था लेकिन उन्हें बीजद प्रत्याशी जमीर एहमद खान ने हरा दिया। श्री खान कर्नाटक सरकार में आवास मंत्री हैं।

सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सुभाषचंद्रन के आर ने एटोर्नी जनरल आर वेंकट रमनी से न्यायालय की अवमानना अधिनियम १९७१ की धारा १५ के तहत सहमति देने की मांग की ताकि वे जूता फेंकू राकेश किशोर के खिलाफ अपराधिक अवमानना की कार्रवाई शुरू कर सकें। उन्होंने कहा कि किशोरर द्वारा सर्वोच्च न्यायालय के मंच पर जूता फेंकना और सर्वोच्च न्यायाधीश के खिलाफ कट्टरपंथी नारे लगाना न्याय प्रशासन में घोर हस्तक्षेप है और इससे सर्वोच्च न्यायालय की गरिमा को ठेस पहुंचती है। जूता फेंकू ने अपने दुष्कृत्य के लिए पछतावा जताने की बजाए अपने कृत्य को उचित ठहराते हुए तर्क दिया की उसे भगवान ने नींद से जगाकर ऐसे करने हेतु कहा था। उसका कहना था कि १६ सितंबर को सर्वोच्च न्यायाधीश ने खजुराहो ने रखी विष्णु भगवान की खंडित मूर्ति को मंडित किए जाने विषयक याचिका ठुकराते हुए कहा था कि जाओ भगवान से कहो कि वे ही मूर्ति मंडित कर दें।

सर्वोच्च न्यायाधीश श्री गवई ने ७ अक्टूबर को अदालती कार्रवाई के दौरान न्यायाधीशों द्वारा की गई मौखिक टिप्पणियों को समाज माध्यमों पर गलत तरीके से प्रस्तुत किए जाने पर स्वयं चिंता जताई है। वे जूता फेंकने की घटना के अगले दिन अपनी प्रतिक्रिया दे रहे थे। उन्होंने हलके फूलके अंदाज में एक किस्सा साझा करते हुए बताया कि उन्होंने अपने साथी न्यायाधीश श्री के विनोद चंद्रन को पिछली सुनवाई के दौरान कुछ टिप्पणियां सार्वजनिक करने से रोका था ताकि उनकी बातों की ऑनलाइन गलत व्याख्या ना हो जाए। मेरे विद्वान साथी श्री चंद्रन को कुछ टिप्पणी करनी थी किंतु मैंने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया वरना हमें नहीं मालूम कि समाज माध्यम पर क्या-क्या रपट आ जाती।

समाचार पत्रों में कानून के घर में घुसकर कानून और न्याय की अवहेलना किए जाने की उक्त घटना पर चिंता जताते हुए कहा गया कि इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी कि जिन लोगों से संविधान और कानून की रक्षा, उसकी मजबूती के लिए काम करने की उम्मीद की जाती है, वही अपनी कुंठाओं का प्रदर्शन करते हुए सारे नियम कायदे ताक पर रख दे। नई दिल्ली से प्रकाशित एक प्रमुख समाचार पत्र के संपादक ने लिखा कि जूता फेंकू वकील ने जो कुछ किया उससे यह तीखा सवाल उठा है कि ऊंची पढ़ाई-लिखाई करके वकालत का पेशा चुनने वाला एक व्यक्ति कैसे अपने दुराग्रहों की वजह से कानून और न्याय प्रक्रिया को अपमानित कर सकता है।

अंत में मेरी काव्य पंक्तियां-

ऊंचे पढ़े-लिखे करते हैं खोटे काम।
तो चुप्पीधारियों पर भी लगते हैं इल्जाम।।

पुस्तकों से बनते हैं विवेकशील संस्कार

वल्लभ किशोर शर्मा

भारत में पुस्तक संस्कृति का इतिहास आदिकाल से समृद्ध रहा है, उपनिषद, वेद, पुराण, रामायण, महाभारत के अलावा प्राचीनतम कृतियाँ पौथीयां ताड़पत्रों, भोजपत्रों, शिलालेखो और प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपियां इसकी गवाह है।

यही पुस्तक संस्कृति है जब छपाई के साधन नहीं थे तब भी हस्तलिखित पांडुलिपियों के द्वारा अध्ययन छात्रों को कराया जाता था तथा गुरूकुलों में संग्रह किया जाता था।

भारत में पुस्तक संस्कृति का महत्व रहा है। वर्तमान में तकनीकी काल में तो पुस्तक संस्कृति एवं संवर्धन की अति आवश्यक है क्योंकि मोबाइल/ इंटरनेट से सतही जानकारीयाँ मिलती हैं, पर पुस्तकें गहराई और धैर्य देती हैं। विवेकशील संस्कारी बनाती है।

मानव सभ्यता के विकास में पुस्तक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। जिस प्रकार वाणी ज्ञान का आदान-प्रदान करती है, उसी प्रकार पुस्तकें उस ज्ञान को सुरक्षित रखकर पीढ़ी दर पीढ़ी पहुँचाती हैं। इसी आधार पर पुस्तक संस्कृति की संकल्पना बनी है।

पुस्तक संस्कृति का आशय केवल पुस्तकें पढ़ने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, साहित्य, विज्ञान, दर्शन और अनुभव की सतत् परंपरा है। इसमें पुस्तकों का लेखन, प्रकाशन, संरक्षण, संग्रहण, अध्ययन तथा उनके आधार पर विचार-विमर्श और अनुसंधान सब सम्मिलित होते हैं। ज्ञान का संवाहक पुस्तकें ही मानव की खोज, अनुभव और चिंतन को कालजयी बनाती हैं। मौखिक परंपरा नष्ट हो सकती है, पर पुस्तकों में संरक्षित ज्ञान स्थायी रहता है।

सांस्कृतिक निरंतरता किसी भी समाज की परंपरा, संस्कृति, साहित्य और इतिहास पुस्तकों में जीवित रहते हैं। यही भावी पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़े रखते हैं।पुस्तकें मौन गुरु भी है जो हमें बिना आवाज किए जीवन जीने की दिशा दिखाती है। समाज में मान सम्मान दिलाने में सहायक होती हैं। मौलिक चिंतन को प्रोत्साहन पुस्तकें नए विचारों और दृष्टिकोणों को जन्म देती हैं। पढ़ने से आलोचनात्मक दृष्टि और सृजनात्मक क्षमता विकसित होती है।

लोकतांत्रिक चेतना पढ़ने की आदत व्यक्ति को जागरूक, तार्किक और विवेकशील बनाती है। यही जागरूकता स्वस्थ लोकतंत्र की आधारशिला है।समाज में संवाद और सहिष्णुता पुस्तकों द्वारा ही संस्कृति विविध विचारों को स्थान देती है, जिससे समाज में सहिष्णुता और संवाद की परंपरा सुदृढ़ होती है।

आज सूचना तकनीक और त्वरित माध्यमों के दौर में पुस्तक संस्कृति व्यक्ति को गहराई, गंभीरता और धैर्यपूर्ण अध्ययन का अभ्यास कराती है, जो सतही ज्ञान से कहीं अधिक उपयोगी है।

पुस्तक संस्कृति मात्र पढ़ने की आदत नहीं है, यह एक ऐसी जीवन दृष्टि है जो व्यक्ति को गहराई, संवेदनशीलता और विवेक देती है। जब समाज पुस्तक केंद्रित होता है तो उसमें ज्ञान का आदर, विचारों का आदान-प्रदान और सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है। इसलिए आज भी पुस्तक संस्कृति का संवर्धन आवश्यक है ताकि तकनीक के शोरगुल में भी मानवीयता, विवेक और सृजनशीलता सुरक्षित रह सकें। पुस्तक संस्कृति केवल पढने की आदत नहीं यह ज्ञानवर्धक एवं सृजनशीलता की आत्मा है। -नरसिंहगढ़

शिक्षा,भाषा और संस्कृति देश की समृद्धि का पैमाना

संजीव ठाकुर

शिक्षा सदैव समाज, संस्कृति और सभ्यताओं के साथ परिवर्तनशील और प्रगतिशील रही है। यह न केवल व्यक्तिगत उन्नति का माध्यम है, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास की आधारशिला भी है। शिक्षा, ज्ञान, कला, साहित्य और संस्कृति को देश-विदेश की सीमाओं में बाँधना संभव नहीं है। यह असीमित भंडार है, जिसमें आकाशीय ऊँचाइयाँ भी शामिल हैं। न केवल इसकी गहराई को नापा जा सकता है, न ही इसकी ऊँचाई को देखा जा सकता है। शिक्षा और ज्ञान की यह विशालता मानव जीवन में अनंत संभावनाओं के द्वार खोलती है।

पूर्वी सभ्यता, विशेषकर भारतीय परंपरा, जहाँ अध्यात्म, वेद, पुराण और योग पर आधारित है, वहाँ पश्चिमी सभ्यता विज्ञान, तकनीकी नवाचार और अनछुई रहस्यमय खोजों पर आधारित है। इन दोनों सभ्यताओं ने अपने-अपने क्षेत्र में मानव जीवन को बदलने वाले अनमोल योगदान दिए हैं। उदाहरण स्वरूप, पश्चिमी विज्ञान ने मानव को चंद्रमा पर पहुँचने का अवसर दिया और आधुनिक तकनीक जैसे हवाई जहाज, इंजन, रेडियो और डिजिटल तकनीक से जीवन को सरल और उन्नत बनाया। वहीं, भारतीय ज्ञान और दर्शन ने योग, आयुर्वेद, ध्यान और जीवन मूल्यों के माध्यम से मानव जीवन में शांति, संतुलन और आत्मसाक्षात्कार की दिशा प्रदान की। इस प्रकार शिक्षा, भाषा और ज्ञान ने पूर्व और पश्चिम के बीच समन्वय स्थापित किया। पश्चिम ने भारतीय दर्शन, आयुर्वेद और योग को अपनाकर अपनी जीवनशैली में संतुलन पाया, और भारत ने पश्चिम के विज्ञान और तकनीकी ज्ञान को अपनाकर विकास की नई ऊँचाइयों को छुआ। शिक्षा और भाषा सदैव अज्ञानता के तमस में प्रकाश की तरह कार्य करती रही है। यह नवजीवन की विकास धारा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और समाज में सतत प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है।

भारतीय संस्कृति और दर्शन में जैन, बौद्ध, नव्य वेदांत और आधुनिक चिंतन ने समाज में नवयुग की कल्पना को साकार किया। वहीं पश्चिम के दार्शनिक और चिंतक जैसे प्लूटो, अरस्तु, सुकरात, कार्ल मार्क्स और लेनिन ने सामाजिक और राजनीतिक विकास के सिद्धांत प्रतिपादित किए, जिन्हें पूरी दुनिया ने अपनाया। इस प्रकार, दोनों सभ्यताओं में ज्ञान और विचारों का आदान-प्रदान निरंतर जारी रहा।

भारतीय समाज में हमेशा सुधार और नवीन युक्तियों को अपनाने की क्षमता रही है। स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता पश्चात राजनीति और समाज में हुए परिवर्तन इसका सजीव उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए, गांधीजी ने सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन को साकार किया, जबकि जवाहरलाल नेहरू ने विज्ञान और तकनीक के माध्यम से आधुनिक भारत की नींव रखी। सुभाष चंद्र बोस और बाल गंगाधर तिलक ने स्वतंत्रता संग्राम में नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की। इन सबके प्रयासों ने भारत को विश्व पटल पर एक नया स्वरूप और पहचान दी।

पाश्चात्य ज्ञान ने हमें अपने आडंबर, अंधविश्वास और रूढ़िवादिता पर विजय पाने में मदद की। उदाहरण के लिए, वास्तु, जन्मकुंडली और अंधविश्वास से जुड़े कई प्रचलित विश्वासों को आधुनिक विज्ञान और शिक्षा के माध्यम से समाज से दूर किया जा सका। यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा और ज्ञान समाज में समग्र सुधार और नवप्रवर्तन के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं।

हमारे दैनिक जीवन में भी शिक्षा, भाषा और ज्ञान हमें यह एहसास कराते हैं कि हम अभी भी कितने पीछे हैं और कितनी दूर तक सीखने की आवश्यकता है। ज्ञान का कोई अंतिम स्रोत नहीं होता; यह एक ऐसा समृद्ध भंडार है, जिसमें जितना भी सीखना संभव है, वह निरंतर बढ़ता रहता है। अतः हमें सदैव प्रयासरत रहना चाहिए कि हम पल-पल कुछ नया सीखें—हर व्यक्ति, हर समाज, और हर सभ्यता से। शिक्षा, भाषा और ज्ञान ही हमें समृद्ध, विकसित और परिवर्तनशील बनाते हैं। परिवर्तनशील जीवन ही नई ऊर्जा, आशा और विकास की नींव रखता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो हर मानव, हर समाज और हर राष्ट्र के लिए सीखने, अपनाने और नवाचार करने की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती। यही कारण है कि शिक्षा और ज्ञान न केवल व्यक्तिगत उन्नति बल्कि समग्र मानवता के विकास के लिए अनिवार्य हैं।

-रायपुर, छत्तीसगढ़

जयप्रकाश : परिवर्तन की वैचारिकी पुस्तक लोकार्पित

निर्दलीय संवाद

भोपाल। प्रसिद्ध समाजवादी चिंतक और लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय संरक्षक श्री रघु ठाकुर ने स्थानीय गांधी भवन में समाजवादी विचारक श्री शिवदयाल की पुस्तक 'जयप्रकाश परिवर्तन की वैचारिकी' पुस्तक का लोकार्पण करते हुए कहा कि आज गांधी, विनोबा और लोहिया के साथ जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति के स्वप्न को साकार किए जाने की आवश्यकता है।

श्री ठाकुर ने कहा कि डॉ. राम मनोहर लोहिया ने सप्त क्रांति विषयक जो विचार देश के नागरिकों के सामने रखा था उसे श्री जयप्रकाश नारायण ने संपूर्ण क्रांति के माध्यम से आगे बढ़ाया। उन्होंने कहा कि गांधीजी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी विनोबा भावे के साथ मिलकर श्री जयप्रकाश नारायण ने देश का मार्गदर्शन किया। आगे चलकर उन्होंने सभी विपक्षी दलों को एकजुट कर कांग्रेस के शासन से देश को छुटकारा दिलाया। इस अभियान के अंतर्गत उन्हें सत्तापक्ष की ओर से प्रताड़ित किया गया। देश और दुनिया की व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए जो भी व्यक्ति संघर्ष करता है उसे अपमान और प्रताड़ना का सामना करना पड़ता है। इसके पूर्व सप्रे संग्रहालय के संस्थापक निदेशक विजयदत्त श्रीधर ने कहा कि संत विनोबा भावे ने १९६० में डाकुओं जिन्हें बाद में बागी कहा गया का समर्पण कराया था और उसके बाद १९७२ में जब चंबल घाटी के सबसे बड़ी बागी माधौ सिंह उनके समक्ष नतमस्तक हुआ तथा कहा कि घाटी के सभी बागी आत्मसमर्पण करना चाहते हैं तो विनोबा जी ने उसे जय प्रकाशजी के पास भेज दिया। जयप्रकाशजी को जब यह बताया गया कि बागी को बाबा ने भेजा है तो उन्होंने सभी बागियों का जौरा में गांधीजी की प्रतिमा के समक्ष आत्मसमर्पण कराने की दिशा में कदम उठाया। श्री श्रीधर ने कहा कि आपातकाल में समाचार माध्यमों की जो भूमिका रही उसकी जितनी प्रशंसा की जाए वो कम है। अधिकांश समाचार पत्रों ने सेंसर का विरोध किया था जिनमें जनसत्ता अग्रणी रहा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता गांधी भवन न्यास के सचिव श्री दयाराम नामदेव कर रहे थे। जिस पुस्तक का लोकार्पण हुआ उसके लेखक श्री शिवदयाल चार दशकों से सृजनात्मक एवं वैचारिक लेखन के क्षेत्र में सक्रिय हैं। कार्यक्रम के उपरांत नागरिकों ने उनकी पुस्तक क्रय कर लेखक का हौसला बढ़ाया।

दो दिवसीय स्वास्थ्य कार्यशाला संपन्न

निर्दलीय संवाद

भोपाल। विश्व गुरु भारत फाउंडेशन ट्रस्ट के निरोग भारत अभियान के अंतर्गत ११ अक्टूबर को प्रातः १० बजे से हिंदी भवन में नागरिक स्वास्थ्य कार्यशाला आरंभ हुई। शिविर में एकल विश्व विद्यालय के कुलगुरु प्रकाश किरकिरे, रिलायंस के पूर्व अध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद शांडिल्य, दिल्ली का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

ट्रस्ट के संयोजक गोविंद दास भूतड़ा ने शुरूआत में बताया कि यह आयोजन गांधीजी के आजादी के बाद के प्रमुख कार्य प्राकृतिक चिकित्सा को बढ़ावा देने की दिशा में एक कदम है। वर्तमान डिजिटल युग में सभी चिकित्सा पद्धतियों के होलिस्टिक चिकित्सकों का नाम मात्र शुल्क पर हम मार्गदर्शन दे रहे हैं। एलोपैथी चिकित्सा, आयुर्वेद होम्योपैथी, नेचरोपैथी थैरेपी, डिटॉक्स सिस्टम, आहार, चिकित्सा आदि वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों के विशेषज्ञों की कार्यशाला में मार्गदर्शन का सुनहरा अवसर है।

शिविर में शामिल होने वाले सभी नागरिकों के लिए दो दिन तक रुकने की व्यवस्था भी ट्रस्ट द्वारा की गई। शिविर वरिष्ठ नागरिकों को 'वानप्रस्थ जीवन का यौवन' विषय पर स्वस्थ्य जीवन शैली पर मार्गदर्शन सहित वरिष्ठ नागरिकों के मोहल्ला संगठनों, विलीजिंग थैरेपी डिटॉक्स शिविर से लीवर, गॉल ब्लेडर, किडनी डिटॉक्स के निरापद प्रयोग से मोटापा नियंत्रण, हार्ट की सर्विसिंग आदि के अनेक लाभ शिविरार्थियों को मिले। अनेक नागरिकों ने ऑनलाइन पर भी मार्गदर्शन प्राप्त किए।

श्री भूतड़ा ने दैनिक निर्दलीय को बताया कि ट्रस्ट का एक समूह आज प्रदेश की राजधानी भोपाल के चार मोहल्लों में घूम-घूमकर चिकित्सा की पुरातन पद्धतियों से जन सामान्य को अवगत कराता रहा। ट्रस्ट की यह प्रक्रिया आगे सभी स्थानों पर चले इस हेतु हम प्रयासरत हैं।